

पश्चिम मालवा में भील और भिलाला जनजातियों की पारंपरिक कला और सांस्कृतिक प्रथाओं का संरक्षण और पुनरुद्धार

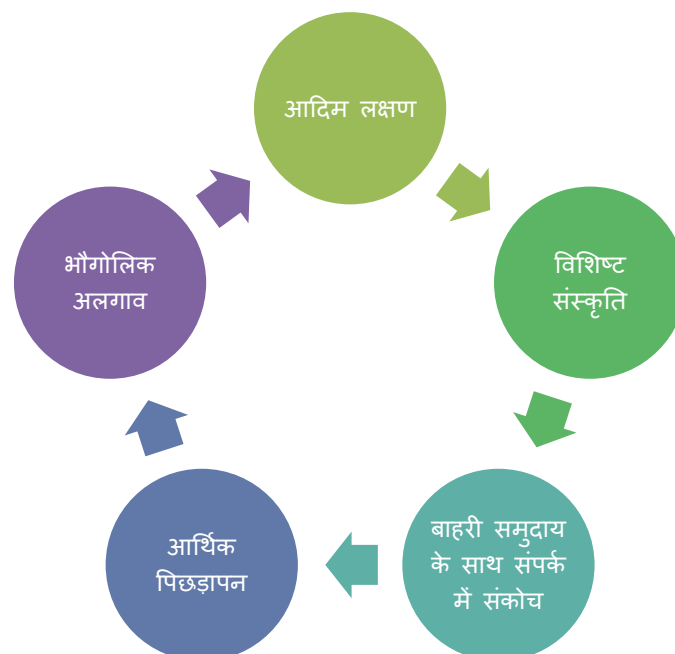
जितेंद्र कुमार पटेल

सारांश – पश्चिमी मालवा में भील और भिलाला जनजातियों की पारंपरिक कला और सांस्कृतिक प्रथाओं के संरक्षण और पुनरुद्धार का जिससे उनकी प्रथाओं का संरक्षण कर सके। भारत की सबसे प्राचीन जनजातियों में से एक, जो धनुष-तीर चलाने में निपुणता के लिए प्रसिद्ध हैं। ये प्रकृति पूजक होते हैं और इनके रीति-रिवाज प्रकृति से निकटता से जुड़े हुए हैं। भीलों का एक उप-समूह, जो अपेक्षाकृत अधिक विकसित माना जाता है। इनमें राजपूत संस्कृति का प्रभाव देखने को मिलता है और ये खुद को राजपूतों से जोड़कर देखते हैं। यह भील जनजाति की सबसे महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध कला है। यह केवल एक कला नहीं, बल्कि आस्था का प्रतीक है, जिसमें दीवारों पर देवी-देवताओं, जानवरों और प्रकृति से संबंधित चित्र बनाए जाते हैं। ये जनजाति विभिन्न हिंदू त्योहारों और अपने पारंपरिक अनुष्ठानों को मनाती है। फसल आने पर पिथौरा की पूजा करना एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान है। यह भील जनजाति की एक सामुदायिक पहल है, जिसमें भूजल संरक्षण, वनरोपण और सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा दिया जाता है। विभिन्न संगठन और कलाकार भील कला को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रस्तुत करके इसे संरक्षित कर रहे हैं। इसे पारंपरिक दीवार कला से कैनवास और अन्य माध्यमों पर लाया जा रहा है। अध्ययन बताते हैं कि आधुनिक उपकरण और मीडिया पारंपरिक कला रूपों को प्रभावित कर रहे हैं। इसके बावजूद, लोक संस्कृति को संरक्षित करने के लिए पारंपरिक और आधुनिक तरीकों का संतुलित उपयोग करने की आवश्यकता है। हालांकि जैसी पारंपरिक प्रथाओं का पुनरुद्धार सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से किया जा रहा है, जिससे न केवल पर्यावरण का संरक्षण हो रहा है, बल्कि पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक विरासत भी जीवित रह रही है। मध्य प्रदेश सरकार ने समय-समय पर पश्चिम मालवा में अवस्थित भील - भिलाला जनजातियों के पारंपरिक एवं सांस्कृतिक प्रथाओं का संरक्षण और पुनरुद्धार के लिए कई योजनाएं बनाई हैं, जिससे वह उनका संरक्षण कर सके।

मूलशब्द -पश्चिमी मालवा, संरक्षण, भील जनजाति, विभिन्न संगठन, सांस्कृतिक, प्रथाओं, पुनरुद्धार, पारंपरिक

1 प्रस्तावना -

आधुनिक संदर्भों में 'जनजाति' शब्द के लिए भारतीय संविधान में 'अनुसूचित जनजाति (अ.ज.जा.)' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया गया। यद्यपि भारतीय संविधान में 'अनुसूचित जनजाति' की स्पष्ट परिभाषा का अभाव है तथापि भारत के राज्य अथवा संघ राज्य क्षेत्र के संबंध में भारतीय संविधान के अनुच्छेद 366 (25) में अनुसूचित जनजाति की परिभाषा ऐसी जनजातियों अथवा जनजातीय समुदाय के भाग या समूहों के रूप में की गई है, जिन्हें अनुच्छेद 342 के अंतर्गत 'अनुसूचित' किया गया है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342(1) और अनुच्छेद 342 (2) में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राष्ट्रपति संबंधित राज्य सरकार से परामर्श करने के उपरान्त सार्वजनिक अधिसूचना द्वारा अ.ज.जा. घोषित कर सकते हैं। इन आदेशों में संशोधन की शक्ति केवल संसद को प्राप्त है।¹ व्यवहारतः अ.ज.जा. का संकेद्रण देश के वन, पहाड़ी, दुर्गम भू-भाग में है। अ.ज.जा. कौन व्यक्ति या समुदाय होगा इस संबंध में भारतीय संविधान में मापदण्ड स्पष्ट नहीं है किंतु अ.ज.जा. की विशेषताओं का निर्धारण संसद द्वारा गठित समितियों द्वारा समय-समय पर किया गया है। अ.जा./अ.ज.जा. की सूचियों के संशोधन पर लोकुर समिति, 1965, सलाहकार समिति (कालेलकर), अ.जा./अ.ज.जा. आदेश (संशोधित) विधेयक, 1967 और चंदा समिति, 1969 की रिपोर्ट में शामिल है। यथा इन समूदायों के संबंध मापदण्ड निम्नलिखित है :-



इस प्रकार राज्यवार जनजातियों को अनुसूचित घोषित किया गया है। जिसे अंततः अनुसूचित जनजाति कहा जाने लगा।

2 मध्यप्रदेश में भील जनसंख्या -

मध्य प्रदेश की सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति भील है। 2011 की जनगणना के अनुसार भील जनजाति की कुल जनसंख्या 5993921 है, जिसमें पुरुष 3016445 एवं महिलाओं की कुल जनसंख्या 2977476 हैं। भील जनजाति की साक्षरता 42.2 प्रतिशत है, जिसमें 50.3 प्रतिशत पुरुष एवं 34.1 प्रतिशत महिलाएं साक्षर हैं। भील जनजाति में पश्चिमी मध्य प्रदेश के अन्तर्गत अलीराजपुर जिला सबसे कम साक्षर वाला जिला है।

3 जनजाति के संबंध में विचार

- **रेमण्ड फर्थ** ने कहा- "जनजाति एक ही सांस्कृतिक श्रृंखला का मानव समूह है जो साधारणतः एक ही भू-खण्ड पर रहता है, एक ही भाषा-भाषी है तथा एक ही प्रकार की परम्पराओं एवं संस्थाओं का पालन करता है और एक ही सरकार के प्रति उत्तरदायी होता है।"²
- **जार्ज पीटर मर्जाक** ने जनजाति की परिभाषा देते हुए कहा है- "यह एक सामाजिक समूह होता है। एक अलग भाषा होती है तथा भिन्न संस्कृति व एक स्वतंत्र राजनैतिक संगठन होता है।"
- **डब्ल्यू.एच.आर. रिवर्स** के अनुसार जनजाति एक सरल प्रकार का सामाजिक समूह है। जिसकी सामान्य भाषा है तथा जो युद्ध जैसी विपत्तियों का संगठित रूप से सामना करती है। रिवर्स ने इसमें सामान्य निवास को महत्वपूर्ण नहीं माना है, क्योंकि अनेक जनजातियाँ घुमंतु होती हैं।³
- **फ्रेज बोऑस** के अनुसार "जनजाति का अर्थ आर्थिक दृष्टि से ऐसा स्वतंत्र समूह है जो एक भाषा बोलता है और बाघ आक्रमण से सुरक्षा के लिए संगठित होता है।"
- **गिलिन और गिलिन** के अनुसार "जन जाति किसी भी ऐसे स्थानीय समुदायों के समूह को कहा जाता है जो एक सामान्य भू-भाग पर निवास करता हो, एक सामान्य भाषा बोलता हो और एक सामान्य संस्कृति का व्यवहार करता हो।"⁴

उपर्युक्त परिभाषाओं में से प्रायः प्रत्येक में जनजाति को निश्चित भू-भाग का निवासी बतलाया गया है किंतु डॉ. रिवर्स ने अपनी परिभाषा में निश्चित भू-भाग को आवश्यक नहीं माना है। उनका तर्क है कि अनेक जनजातियाँ घुमंतु जीवनव्यतीत करती हैं, जैसे टुन्ड्रा प्रदेशों के याकूत और सोमायड्स। बहरलाल जनजातियों की परिभाषा में यह सतर्कता कुछ बारीक है।⁵

पैरो ने ठीक लिखा है- "जनजाति कितनी भी खानाबदोश क्यों न हो, वह घुमती फिरती दुनिया के निश्चित भू-भाग पर ही है। अनेक स्वतंत्र राष्ट्रों में ऐसे समूह निवास करते हैं जो उस क्षेत्र के मूल निवासी हैं या जनजातिय हैं जो राष्ट्र की मुख्य धारा में अभी तक घुल-मिल नहीं सके हैं तथा जिनकी सामाजिक, आर्थिक अथवा सांस्कृतिक स्थिति उन्हें उन लाभों और अधिकारों से वंचित करती है जिसका लाभ शेष जनसंख्या को मिल रहा है। इसे मानवीय दृष्टिकोण से तथा राष्ट्रों के हितों को भी ध्यान में रखकर सोचा जाना चाहिए कि इन समूहों को कार्य करने की सुविधाएं मिलें ताकि वे राष्ट्रीय हितों के कार्यों में हाथ बँटा सकें।"⁶

4 भील शब्द का अर्थ

भारत वर्ष में लगभग 500 आदिवासी जातियां हैं। आदिवासी समूह में भील जाति मुख्य है। और वह चार राज्यों की जुड़ी हुई सीमाओं पर ज्यादा रहते हैं। भील शब्दों-शब्दों के विविध अर्थों का विवरण हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

भील शब्द की उत्पत्ति द्रविड़ भाषा के 'बील' शब्द पर से हुई है। द्रविड़ भाषा में बील का अर्थ बाण अथवा तीर और धनुष होता है। भील शब्द बील्व याने तीर और धनुष धारण करने वाली जाति के अर्थ में भी किया गया है।⁷



स्रोत - <https://blog.mygov.in>⁸

भील आदिवासी शब्द अबोरिजीनल अंग्रेजी शब्द पर से आया है। आदिवासी या आदिजाति नामकरण अंग्रेज श्रीमान हट्टशाने किया है। भील जाति विषयक प्रथम अभ्यास करने वाले पहले ब्रिटिश अधिकारी "कर्नल टोड" थे। भील संस्कृत भाषा में 'भील्ला' का तद्भव रूप है।

कविराज श्यामलदास ने अपनी कृति "वीर विनोद" में भीलों की उत्पत्ति के बारे में लिखा है कि, राजस्थान के कल्याणपुर जिले में ओवरी गांव के लोग मछार कहलाते हैं। यह लोग खुद को धार के पुवार राजा की संतान कहलाते हैं। राजा के दो पुत्र थे। मछार और डामर। धनकवाड़ा में आए और वे लोग वहीं बस गए। भील जाति में ही विवाह किया और भील बन गए। ये उनकी संतान हैं। भीलों की दंतकथा अनुसार शंकर भगवानने सबसे पहले बिली का वृक्ष उत्पन्न किया था ऐसा भी मानते हैं। एक आदमी बिली के पत्ते शिवजी को पूजा में अर्पण करने लगा और धीमे-धीमे भक्तों की संख्या बढ़ती गई और वह पहला पुजारी बना गया। भीलों की उत्पत्ति आदिनाथ शिव तथा शक्ति, शंकर-पार्वती के द्वारा अमरकंटक (म.प्र.) से हुई है और मालवा अर्थात् आज की उज्जैन नगरी जहां पर पहले भील राजा राज करते थे। उनके द्वारा शिवलिंग की स्थापना की गई थी जो आर्य राजा विक्रमादित्य परमार ने भीलों से छीन ली और वहाँ पर अपनी राजधानी स्थापित की।⁹ हमारे अनुमान अनुसार भील शब्द तमलब बिल्व, धनुष एवं तीर धारण करने वाले जाति के अर्थ में उपयोग किया है। भील समाज के अनुसार देहवाली भीली बोली अनुसार तीर को बिल्खा के नाम से भी जाना जाता है। जो पृथ्वी की उत्पत्ति के पहले बना हुआ हथियार तीर कमान, तीर-धनुष का उपयोग इस जाति ने पहले किया होगा ऐसा मानना उचित होगा।

भील समाज में समाविष्ट उपजातियां वसावे, वसावा, पाडवी, बलवी, भील, गरसिया, भीलाला, पवार, धानका, तडवी, गोंड, कथोडी, कोटवाडीया, मेवासी भील. पावरा, बारिया, राठवा, मालवी, पारधी, मावची, गामित, गामेती, नायका, मीना, कटारा, नाईक जातियों का समावेश होता है। इसके अलावा भी पश्चिम भारत की सभी जातियाँ भील की उपजातियाँ हैं।¹⁰

5 भील - भिलाला जनजातियों की पारंपरिक कला

भील जनजाति की पारंपरिक कला में पिथौरा चित्रकला, जो मिट्टी की दीवारों पर प्राकृतिक रंगों से की जाती है, और घूमर लोक नृत्य शामिल हैं। इसके अलावा, भील कला में प्रकृति, जानवरों और पूर्वजों से संबंधित रूपांकन देखे जाते हैं, जो अक्सर बिंदुओं (डॉट्स) के प्रयोग से बनाए जाते हैं। भूरी बाई, लाडू बाई और शेर सिंह जैसी हस्तियां इस कला के प्रमुख कलाकार हैं।

5.1 पिथौरा चित्रकला -

यह मध्य प्रदेश की भील जनजाति की एक प्रसिद्ध और आस्था से जुड़ी कला है। नई फसल घर आने पर या महत्वपूर्ण अवसरों पर इस कला को घरों की दीवारों पर बनाया जाता है। इस चित्रकला में देवी-देवताओं और प्राकृतिक तत्वों का चित्रण होता है। पारंपरिक रूप से इस चित्रकला में पत्तियों, फूलों और पत्थरों से प्राप्त प्राकृतिक रंगों का प्रयोग होता था।

5.2 घूमर

यह भील जनजाति का एक पारंपरिक लोक नृत्य है, जिसमें महिलाओं की जीवंतता दिखाई देती है। नृत्य में महिलाएं बहते हुए घाघरे (साड़ी) पहनती हैं, जो कलात्मक रूप से जीवंतता प्रदान करते हैं।

5.3 अन्य पारंपरिक कला

भील कलाकार अपनी कलाकृतियों के लिए पत्तियों, फूलों, जड़ों और पत्थरों से प्राप्त प्राकृतिक रंगों का उपयोग करते हैं। समकालीन भील कला में बिंदुओं (डॉट्स) का प्रयोग एक महत्वपूर्ण पहचान है, हालांकि पारंपरिक कलाकार अब भी इन रूपांकनों को बनाए रखते हैं। इनके चित्रों में अक्सर हिरण, मोर, देवी-देवता, विवाह और कृषि-आधारित जीवन से संबंधित विषय शामिल होते हैं।

5.4 प्रमुख कलाकार

भूरी बाई: यह भील समुदाय की एक प्रमुख कलाकार हैं, जिन्होंने कागज और कैनवास पर प्राकृतिक रंगों और पहले से तैयार रंगों का उपयोग करके अपनी कला को प्रस्तुत किया। लाडू बाई, शेर सिंह, राम सिंह और दुबू बान्या: ये अन्य प्रसिद्ध भील कलाकार हैं, जिनकी कला में लाल, हरे और काले रंगों के विशिष्ट पैलेट का प्रयोग होता है।¹¹

6 भील जनजाति की सांस्कृतिक परंपराएं

भील जनजाति की सांस्कृतिक परंपराओं में कलात्मक घरों की सजावट, गोल गधेड़ो जैसे साथी चुनने के उत्सव, विवाह के लिए दापा और हाथी वेडो प्रथाएं, शरीर को सजाने के लिए गोदना प्रथा, और मृत्यु के बाद की रस्में शामिल हैं। वे भगवान शिव, दुर्गा और क्षेत्रीय देवताओं की पूजा करते हैं, जबकि उनकी धार्मिक प्रथाओं में आत्माओं को शांत करना और केसरिनाथ के जल का उपयोग शामिल है। उनकी समृद्ध मौखिक परंपरा में गीतों, नृत्यों (जैसे गैर और घूमर) और कहानियों का महत्वपूर्ण स्थान है।¹²

6.1 सामाजिक और विवाह प्रथाएं

- गोल गधेड़ो: यह एक महत्वपूर्ण उत्सव है जो होली के बाद मनाया जाता है। इसमें युवक-युवतियाँ एक बांस पर चढ़कर नारियल तोड़ने का प्रयास करते हैं और सफल होने वाला युवा अपनी पसंद की लड़की को चुन सकता है।

- दापा: विवाह के अवसर पर वर पक्ष द्वारा वधु पक्ष को कन्या का मूल्य चुकाने की प्रथा है।
- हाथी वेडो: यह विवाह की एक परंपरा है, जहाँ दूल्हा और दुल्हन एक बांस, पीपल या सागौन के वृक्ष के समक्ष फेरे लेते हैं।
- गोदना प्रथा: भील पुरुष और महिलाएँ अपने शरीर पर गुदने (टैटू) बनवाती हैं, जो उन्हें भील के रूप में पहचान दिलाता है।
- घर जँवाई प्रथा: कुछ भील परिवारों में दामाद को लड़की के घर ससुराल में रहकर माता-पिता की सेवा करने की प्रथा है।¹³

6.2 धार्मिक और आध्यात्मिक मान्यताएँ

- देवता पूजा: भील भगवान शिव और दुर्गा की पूजा करते हैं, साथ ही वे जंगल के देवताओं और बुरी आत्माओं को भी प्रसन्न करते हैं।
- केसरिनाथ: भीलों में यह विश्वास है कि केसरिनाथ मंदिर में चढ़ी हुई केसर के पानी को पीकर कोई भी व्यक्ति झूठ नहीं बोल सकता।

6.3 त्योहार और उत्सव

- भगोरिया: यह एक भील उत्सव है जिसमें गोल गधेड़ों जैसे युवा साथियों को चुनने के अवसर मिलते हैं।
- अन्य उत्सव: भील समुदाय अपने रीति-रिवाजों, त्योहारों और तीज-त्योहारों को पूरी उमंग और उत्साह से मनाता है।

6.4 नृत्य और संगीत

- नृत्य: घूमर और गैर जैसे कई पारंपरिक नृत्य भील संस्कृति का अभिन्न अंग हैं।
- गीत और कहानियाँ: उनके गीत और कहानियाँ उनकी मौखिक परंपरा का हिस्सा हैं और उनकी संस्कृति को दर्शाती हैं।

7 पारंपरिक कला और सांस्कृतिक प्रथाओं के संरक्षण और पुनरुद्धार

भील जनजाति की पारंपरिक कला और सांस्कृतिक प्रथाओं के संरक्षण और पुनरुद्धार के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं। ये प्रयास सरकारी योजनाओं, गैर-सरकारी संगठनों (NGO) और स्वयं भील समुदाय के लोगों द्वारा चलाए जा रहे हैं।¹⁴

7.1 कला का संरक्षण और पुनरुद्धार

- पिथौरा चित्रकला: भीलों की यह पारंपरिक चित्रकला प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके दीवारों पर बनाई जाती है। अब इसे कैनवास और आधुनिक रंगों पर भी बनाया जा रहा है, जिससे इसकी पहुँच और लोकप्रियता बढ़ी है।
- कला प्रदर्शनियाँ और प्रचार: विभिन्न संगठन राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भील कला की प्रदर्शनियाँ आयोजित करते हैं। इससे कलाकारों को आर्थिक लाभ मिलता है और कला का प्रचार होता है।
- कला शिक्षा और प्रशिक्षण: युवा भील कलाकारों को अपनी पारंपरिक कला को सीखने और उसमें सुधार करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। कई कलाकार यह कला अपनी माताओं से सीखते हैं, जिससे यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती है।

7.2 सांस्कृतिक प्रथाओं का संरक्षण

- पारंपरिक अनुष्ठानों का दस्तावेजीकरण: भील समुदाय के पारंपरिक अनुष्ठानों, गाथाओं, गीतों, नृत्यों और जीवनशैली से जुड़ी अन्य प्रथाओं को ऑडियो-वीडियो दस्तावेजीकरण के माध्यम से संरक्षित किया जा रहा है।
- पर्यावरण संरक्षण: झाबुआ और अलीराजपुर जैसे जिलों में भील समुदाय ने "हलमा" जैसी अपनी प्राचीन परंपराओं का पुनरुद्धार किया है। इस परंपरा के तहत वे जल और वन संसाधनों के संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयास करते हैं।
- गवरी नृत्य-नाटिका: राजस्थान के भील समुदाय का प्रसिद्ध 40 दिवसीय गवरी नृत्य-नाटिका त्योहार, जो शिव और भस्मासुर की कहानी पर आधारित है, उसे भी बढ़ावा दिया जा रहा है।
- जनजातीय पर्व और उत्सव: सरकार और अन्य संगठन राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर जनजातीय उत्सवों का आयोजन करते हैं। इन उत्सवों में भील कलाकार अपने नृत्यों, संगीत और अन्य सांस्कृतिक रूपों का प्रदर्शन करते हैं।

7.3 सरकारी योजनाएँ और पहल

- जनजातीय अनुसंधान संस्थान (TRIs): इन संस्थानों को केंद्र सरकार द्वारा वित्तीय सहायता दी जाती है, ताकि वे जनजातीय सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने और संरक्षित करने के लिए विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित कर सकें।
- जनजातीय कला और संस्कृति पोर्टल (आदि कलाकार): यह पोर्टल जनजातीय कलाकारों का एक केंद्रीय भंडार है, जहाँ उनकी कला का प्रचार किया जाता है।
- जनजातीय गौरव दिवस: सरकार ने 15 नवंबर को 'जनजातीय गौरव दिवस' घोषित किया है, जिसका उद्देश्य जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को याद करना और जनजातीय संस्कृति को बढ़ावा देना है।
- संगीता नाटक अकादमी: यह संस्था भी लोक और जनजातीय कलाओं के लिए अनुदान और दस्तावेजीकरण में मदद करती है।¹⁵

8 पारंपरिक कला और सांस्कृतिक प्रथाओं के संरक्षण और पुनरुद्धार में चुनौतियाँ

इन प्रयासों के बावजूद भील कला और संस्कृति के सामने कुछ चुनौतियाँ हैं, जैसे कि आधुनिकीकरण का प्रभाव और पारंपरिक ज्ञान का हस्तांतरण कम होना। इन चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक है कि संरक्षण के प्रयासों को और अधिक व्यापक बनाया जाए और स्वयं भील समुदाय के लोगों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल किया जाए।¹⁶

9 निष्कर्ष

भील जनजाति की पारंपरिक कला और सांस्कृतिक प्रथाओं के संरक्षण और पुनरुद्धार का निष्कर्ष यह है कि ये प्रयास न केवल उनकी समृद्ध विरासत को बचाते हैं, बल्कि भील समुदाय को सशक्त बनाते हुए भारत की सांस्कृतिक विविधता को भी समृद्ध करते हैं। इन पहलों में कई पहलुओं का एकीकरण शामिल है, जिनमें समुदाय-आधारित दृष्टिकोण, आधुनिक तकनीकों का उपयोग और सरकारी व गैर-सरकारी संगठनों का सहयोग शामिल है। भील जनजाति की पिथौरा चित्रकला को केवल अनुष्ठानों तक सीमित न रखकर इसे विभिन्न माध्यमों, जैसे पत्रिकाओं के आवरण, डिजिटल प्लेटफॉर्म और कला प्रदर्शनियों के माध्यम से वैश्विक पहचान मिली है। कला में अक्सर प्रकृति और पर्यावरण का गहरा सम्मान दिखाई देता है। संरक्षण के प्रयासों में इस पहलू पर जोर दिया गया है, जो जलवायु परिवर्तन जैसे आधुनिक मुद्दों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में

मदद करता है। स्थानीय और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से भील कलाकारों को अपनी कलाकृतियाँ बेचने और आय अर्जित करने का मौका मिला है, जिससे उनकी कला को बढ़ावा मिला है और उनकी आजीविका सुरक्षित हुई है। 'हल्मा' जैसी पारंपरिक सामुदायिक प्रथाओं का उपयोग जल और वन संरक्षण जैसे समकालीन समस्याओं को हल करने के लिए किया जा रहा है। कला और संस्कृति का संरक्षण पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरण के माध्यम से होता है, जहाँ माताएँ अपनी कला अपनी बेटियों को सिखाती हैं। यह एक अनूठी विशेषता है जो भील पहचान को मजबूत बनाती है।

कुल मिलाकर, भील जनजाति की पारंपरिक कला और संस्कृति का संरक्षण और पुनरुद्धार एक बहुआयामी प्रक्रिया है। इसमें आधुनिक तकनीकों का उपयोग करते हुए परंपराओं का सम्मान करना, कलाकारों को आर्थिक सहायता प्रदान करना और सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना शामिल है। इन प्रयासों के माध्यम से, भील समुदाय न केवल अपनी अनमोल विरासत को सुरक्षित रख पा रहा है, बल्कि इसे एक वैश्विक मंच पर भी पेश कर रहा है, जो भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

➤ **संदर्भ सूची**

1. <https://share.google/3U630qgTsqqDNtVrR>
 2. Naik. T.B "The Bhils - A- Study" (P.26).
 3. Burgess E.W. & N. Locke "FAMILY" (p.AGE 1)
 4. Gillin & Gilling "CULTURAL, SOCIOLOGY" (Page 334)
 5. सागवे, किरण - भील एक जनजाति टी. ईयर पब्लिकेशन। सन 2008 पृ० 53
 6. Dr. D.n. Majumdar "HACES & CULTURES OF INDIA (Page 161)
 7. राजपुरा, पापिया भारत में भील के बीच लोकप्रिय शिक्षा के महत्व, एडल्ट ऐज्युकेशन एवं डेवलपमेंट। सन 2001 पृ० 177
 8. <https://blog.mygov.in>
 9. Dr. D.N. Majumdar & T.N. Madan "AN INTRODUCTION TO SOCIL
 10. दुबे, श्यामा चरण भारत के आदिवासी विरासत, विकास पब्लिकेशन हाउस । सन 2002 पृ० 308
 11. कुमार, सुरेश सिंह - भारत में आदिवासी आन्दोलन, मनोहर पब्लिकेशन। सन 2012 पृ० 40
 12. निनाम, क्रांतिलाल, भील जनजाति का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, जोधपुर, 2014, पृ.110
 13. निनाम, क्रांतिलाल, भील जनजाति का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, जोधपुर, 2014, पृ.144
 14. जोड़, मोहनलाल, भील संस्कृति. राजस्थान.2016, पृ. 26
 15. Source:Department Of Public Relations,M.P.
<https://www.mpinfo.org/Home/TodaysNews?newsid=20241004N45&fontname=Mangal&LocID=32&pubdate=10/04/2024>
 16. Source: Department Of Public Relations,M.P.
<https://www.mpinfo.org/Home/TodaysNews?newsid=20241004N45&fontname=Mangal&LocID=32&pubdate=10/04/2024>
 17. mp.gov.in <https://share.google/m4aitN74DVDhgAeFI>
-